© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

अलङ्कारशेखराभिमत योषित् वर्णन

प्रगति देवांशी त्रिपाठी
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

शोध आलेख सार – आचार्य केशवमिश्र ने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'अलङ्कारशेखर' में काव्यलक्षण, रीति आदि का वर्णन किया है तथा साथ ही साथ आचार्य प्रवर ने स्त्रियों से सम्बन्धित उपमाओं का सम्यक् विवेचन भी इस ग्रन्थ में किया है। आचार्यपाद ने स्त्रियों की उपमा चन्द्रमा की कलाओं, अम्बुज, दाम, शिरीष, विद्युत, तारा, कनकलता आदि से दी है। पुनश्च स्त्रियों को आनन्द के स्रोत के रूप में भी वर्णित किया गया है। एवंविध केश तथा उसके पर्याय शब्दों के साथ पाश, पक्ष, हस्त इत्यादि शब्दों का प्रयोग ग्रन्थकार के अलौकिक प्रतिभा का परिचायक स्वीकार किया जा सकता है। अपने मत के प्रमाणभूत आचार्यों में आचार्यवर ने श्री हर्ष, कविकल्पलताकार, गोवर्धनाचार्य आदि के मतों को यत्र–तत्र नामोल्लेखित भी किया है।

मुख्य शब्द – आचार्य केशव मिश्र, अलङ्कारशेखर, काव्यलक्षण, रीति, स्त्रि।

संस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों की परम्परा में सोलहवीं शताब्दी के आचार्य केशव मिश्र रचित 'अलङ्कारशेखर' नामक ग्रन्थ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मम्मटादि आचार्यों की भाँति ही आचार्य केशव मिश्र ने भी अपने ग्रन्थ में काव्यलक्षण, रीति, अलङ्कार, रस इत्यादि काव्यतत्त्वों का विस्तृत वर्णन किया है। इसके साथ ही उन्होंने स्त्रियों तथा पुरूषों से सम्बन्धित विभिन्न उपमानों का भी वर्णन किया है, जो इस ग्रन्थ को अन्य सभी उपलब्ध ग्रन्थों से विशिष्ट बनाता है।

अलङ्कारशेखर के 'पंचम रत्न' के 'प्रथम मरीचि' में योषित् वर्णन प्राप्त होता है। आचार्य केशव मिश्र ने स्त्रियों से सम्बन्धित उपमाओं का सम्यक विवेचन इस मरीचि में किया है। अलङ्कारशेखर के अनुसार स्त्रियों की उपमा चन्द्रमा की कलाओं, अम्बुज, दाम, शिरीष, विद्युत, तारा, कनकलता, दमनक, कांचनयष्टी तथा दीप इन सभी से दी जा सकती है। क्योंकि इनमें साधर्म्य प्राप्त होता है।''[1]

पुनश्च स्त्रियों की उपमा दीप, हेमलता इत्यादि से की गयी है।[2]

आचार्य केशवमिश्र के अनुसार– स्त्रियों का वर्णन आनन्द के स्रोत के रूप में करना चाहिए।[3] तथा स्त्रियों के 'शरीर की कान्ति' की उपमा गोरोचना, स्वर्ण, विद्युत, हरिद्रा, चम्पा, स्वर्णकेतकी से की जानी चाहिए।''[4]

इसके अतिरिक्त कहीं–कहीं पर 'तामरस' तथा 'वेतस' आदि से भी नारी की कान्ति की तुलना की गई है।

स्त्रियों के 'केश' की तुलना अन्धकार शेवार, सागर, पिच्छ, भ्रमर, चामर, यमुनावीचि, नीलमणि, नीलकमल तथा मेघ से की जानी चाहिए क्योंकि इनमें साधर्म्य प्राप्त होता है।[5]

उदाहरणार्थ :– एक पद्य जिसमें सीता के केशों की कान्ति की तुलना यमुना की लहरों, नीलकमल की पंक्तियों तथा शेवार की कान्ति से की गई है।[6]

इसके अतिरिक्त धूमादि से भी केशों की तुलना की जाती है। अलङ्कारशेखकार के अनुसार केश तथा उसके पर्याय शब्दों के साथ पाश, पक्ष, हस्त इत्यादि शब्दों का प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए।

नारी के 'ललाट' का साम्य 'अर्धचन्द्र' तथा 'स्वर्णपट्टिका' से बताना चाहिए। इसी प्रकार 'भौहों' की तुलना लता, कामदेव की धनुष, वीचि, भ्रमर पंक्ति तथा पल्लव आदि से की जानी चाहिए।[7]

भ्रमरपंक्ति, पल्लव, वीचि आदि की श्यामलता भौहों के समान ही होती है तथा स्मरधनुष, वल्ली आदि की वक्रिमता रूपी साम्यता भौहों में प्राप्त होती है। इसी कारण भौहों की तुलना इन सभी से करना उचित ही है।

स्त्री के 'कपोल' की तुलना 'चन्द्रमा' तथा 'ऐना' से की जाती है तथा 'मुख' की उपमा प्रायः इन्दु, कमल तथा दर्पण से दी जाती है और 'नासिका' की तुलना तिल कुसुम से की जाती है। इस विषय में श्रीहर्ष का कथन द्रष्टव्य है। इनके अनुसार, नारी की नासिका का वर्णन कामदेव के तरकस के रूप में किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त कुछ आचार्यों के अनुसार नासिका की तुलना तिल पुष्प से भी की जा सकती है।

स्त्री के 'कण्ठ' की तुलना 'कम्बु' अर्थात् शंख से की जानी चाहिए। अनेक स्थलों पर नायिका को 'हे कुम्बुकण्ठि' तथा 'कम्बुग्रीवे' कहकर सम्बोधित किया गया है। मृगनेत्र, कमल, कमलपत्र, मछली, खंजन, चकोर, केवड़ा, भ्रमर तथा कामदेव के बाण के साथ स्त्रियों के 'नेत्रों' की उपमा दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए एक पद्य जिसमें नायिका के नेत्रों की तुलना कमल तथा खंजन से की गयी है।''[8]

इस विषय में महाकवि माघ का मत है कि नारी के मुख की तुलना कोशातकी से तथा नेत्रों की तुलना बाणों से की जानी चाहिए।

कुछ विद्वानों ने विकसित कुमुदपुष्प से भी नेत्रों की तुलना की है।

अलङ्कारशेखरकार के अनुसार प्रवाल, बिम्बफल, बन्धूक, नवीन पल्लव से 'अधर' तथा 'ओष्ठ' की तुलना करनी चाहिए।[9]

इस विषय में आचार्य गोवर्धन का मत है कि जपापुष्प से भी अधर की उपमा दी जा सकती है। इसके साथ ही समस्तमधुर वस्तुओं से अधरों के माधुर्य का प्रतिपादन करना चाहिए। मुक्ता माणिक्य, नारङ्गफल, अनार के बीजों, कुन्द पुष्प की कली तथा नक्षत्रों से नायिका के 'दन्त' की उपमा देनी चाहिए। उदाहरण के लिए एक पद्य जिसमें नायिका के दाँतों की तुलना नागकेशर के साथ तथा अधरोष्ठ की तुलना बिम्बफल के साथ की गयी है।[10]

अन्य स्थलों पर भी नायिका के दांतों की तुलना कुन्दकोरक इत्यादि के साथ की गयी है।

नारी की 'वाणी' की उपमा हंस, भ्रमर, शुक, किन्नर, वेणु, कोकिल तथा वीणा की ध्वनि से दी जाती है। तथा कण्ठ के माधुर्य को मधुर वस्तुओं के साथ तुलित किया जाता है। इसी प्रकार 'बाहु' की तुलना कमलनाल, विद्युल्लता तथा मृणाल के साथ की जाती है। 'हाथ' की तुलना कमल, पल्लव तथा मूंगा आदि से की जाती है।[11]

इसके अतिरिक्त 'नखकान्ति' का साम्य चन्द्रकला तथा कुन्द पुष्प की कली से होता है। गजशुण्ड, कदली–स्तम्भ आदि से 'ऊरू' की उपमा दी जाती है तथा 'चरण' का साम्य पल्लव, कमल, गुलाब तथा मूंगा से किया जाता है।

आचार्य केशव मिश्र के अनुसार स्त्री के 'कटाक्ष' की उपमा यमुना की लहरों, भ्रमरपङ्क्ति, कामदेव के बाण, विष तथा अमृत से दी जाती है। 'गमन' की तुलना हंस तथा गज से होती है। हंसगामिनी, गजगामिनी इत्यादि विशेषण नायिकाओं के लिए बहुतायत प्राप्त होते हैं। स्त्री के 'हास्य' का साम्य प्रकाश, चन्द्र, पुष्प, अमृत, फेन, कुमुद आदि से दिया जाता है।[12]

नायिका की 'नाभि' प्रदेश का साम्य रसातल, आवर्त, ह्रदकूप, तथा नद आदि से किया जाता है तथा 'मध्य भाग' की उपमा सूची के अग्रभाग, शून्य, अणु, तथा सिंह आदि से की जाती है।

नायिका के 'श्वास' की तुलना 'सुगन्ध' से की जानी चाहिए। हंस ध्वनि तथा सारस के कूजन से नारी की 'नुपुर ध्वनि' का साम्य होता है।

अलङ्कारशेखरकार ने इस विषय में कविकल्पलताकार तथा आचार्य गोवर्धन के मत का भी उल्लेख किया है। कविकल्पलताकार के अनुसार–नायिका की चोटी का साम्य सर्प, भ्रमरपङ्क्ति, भ्रू का साम्य सर्प व तलवार से, नेत्रो ंका साम्य कुमुदपुष्प तथा मद्य से, बाहुद्वय का साम्य बल्लरी तथा शाखादि से, नख का साम्य रक्तफल से तथा नाभि का साम्य विवर अथवा कमल से किया जाता है। आचार्य गोवर्धन का इस विषय में कथन प्रमाणभूत है।[13]

इस प्रकार आचार्य केशवमिश्र ने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'अलङ्कारशेखर' में काव्यलक्षण, रीति आदि का वर्णन किया है तथा साथ ही साथ आचार्य प्रवर ने स्त्रियों से सम्बन्धित उपमाओं का सम्यक् विवेचन भी इस ग्रन्थ में किया है। आचार्यपाद ने स्त्रियों की उपमा चन्द्रमा की कलाओं, अम्बुज, दाम, शिरीष, विद्युत, तारा, कनकलता आदि से दी है। पुनश्च स्त्रियों को आनन्द के स्रोत के रूप में भी वर्णित किया गया है। एवंविध केश तथा उसके पर्याय शब्दों के साथ पाश, पक्ष, हस्त इत्यादि शब्दों का प्रयोग ग्रन्थकार के अलौकिक प्रतिभा का परिचायक स्वीकार किया जा सकता है। अपने मत के प्रमाणभूत आचार्यों में आचार्यवर ने श्री हर्ष, कविकल्पलताकार, गोवर्धनाचार्य आदि के मतों को यत्र–तत्र नामोल्लेखित भी किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. ''चन्द्रकलाऽम्बुजदाम शिरीषं, विद्युत्तारा कनकलता च।
   दमनककाaचनयष्टी दीपः सर्वैरेभिर्योषिद्वर्ण्या।।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)
2. ''शिखेव दीपस्य, लतेव हैमी, कलेव चान्द्री, स्त्रगिवाम्बुजानाम्।
   शिरीषपुष्पं स्मरहेमयष्टी सा मे कदा लोचनगोचरः स्यात्।।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)
3. ''अत्यान्तानन्दसन्दोहदायिनी परिवर्ण्यते।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)
4. ''प्रत्यग्रपद्मबीजद्युति कांचनकेतकच्छायम्।
   गोरोचनाऽतिगौरं वपुरथ साक्षात्कृतं तस्याः।।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)
5. ''तमः शैवालपाथोद–बर्हभ्रमरचामरैः।
   यमुनावीचिनीलाश्म–नीलाब्जाभ्रैः समः कचः।।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)
6. ''जानामि जानकि! कलिन्दसुताजलेऽस्मिन्
   स्नातासि हन्त! यदिमास्तव कुन्तलानाम्
   वीचीषु नीलकमलस्त्रजि शैवलेषु
   दृश्यन्त एवं रूचयः कणशः प्रकीर्णाः।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)
7. ''वल्लीस्मरधनुर्वीचिभृङ्गालीपल्लवैभ्रुवौ।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)
8. ''नयने खजंनकमले बाहू विलसन्मृणालबिसखण्डे।
   वपुरपि शिरीषपुष्पं मुखमिन्दुस्त्वं शरल्लक्ष्मी।।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)
9. ''प्रवालबिम्बबन्धूक–पल्लवैरधरोष्ठकौ।।
   वर्ण्यौ माधुर्यमाश्रित्य यावन्मधुरवस्तुभिः।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)

10. ''तद्दन्ता नागरङ्गानि छोलङ्गानि पयोधरौ।
ओष्ठाधरौ च बिम्बानि सा मे फलमयी प्रिया।।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)

11. ''करकिसलयेन सदृशा रागसरित्पङ्कजेनेव।
शिथिलितविद्रुममहसा स्पृष्टोऽहं चेतनां न लभे।।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)

12. 'ज्योत्स्नेन्दुपुष्पपीयूष फेनकैरववद्हासः।'' (अलङ्कारशेखर 5/1)

13. ''सौन्दर्यं मृदुता कार्श्यमतिकोमलता तथा।
कान्तिरौज्ज्वल्यमावल्यमित्येते वपुषो गुणाः।।
कोशस्य दीर्घकौटिल्य–मृदुनैबिड्यनीलताः।
कपोले स्वच्छता कण्ठे द्राघीयस्त्वं त्रिरेखता।
नेत्रे स्नैग्ध्यं विशालत्वं लोलताऽपाङ्गदीर्घता।
नीलता प्रान्तलौहित्यं श्वैत्यं निबडपक्ष्मता।।
अधरेऽत्यन्तमाधर्युमुच्छवसत्त्वं सुरक्तता।
दन्तस्य श्वैत्यलौहित्यं द्वात्रिंशत्ताऽतिदीप्तता।।
माधुर्यं स्पष्टता वाचां मृदुता समताभुजे।
करेऽतिमृदुता शैत्यं सर्वभागे च शोणता।।
स्तने श्यामाग्रतौन्नत्यविस्तारदृढपाण्डुताः।
रोमाल्यां मार्दवं सौक्ष्म्यं श्यामता नाभिगामिता।
कान्तिर्वृत्तानुपूर्वत्वं जङ्घयोर्नातिदीर्घता।
अत्यन्तमन्दता शैत्यं निश्वासे तु सुगन्धिता।'' – अलङ्कारशेखर 5/1